कृष्ण भक्त मुस्लिम कवयित्री ताज

सगुण भक्ति के आराध्य देवताओं में कृष्ण का स्थान सर्वोपरि है। आधुनिक काल में भी कृष्ण भक्ति काव्य का सृजन हुआ है। कृष्ण के रूप सौंदर्य और लोक कल्याणकारी रूप का प्रभाव हिंदू कवियों पर ही नहीं वरन् मुस्लिम कवियों पर भी पड़ा। रसखान इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। कृष्ण की भक्ति में मुस्लिम महिलाएं भी सम्मिलित हैं। श्री गंगा प्रसाद 'अखौरी' विशारद द्वारा लिखित पुस्तक 'हिंदी के मुसलमान कवि' में अनेक मुस्लिम कवियों की कविताओं का उल्लेख मिलता है, परंतु कृष्ण भक्ति के संदर्भ में केवल 'ताज' कवयित्री का ही उल्लेख मिलता है।

अग्निज उपमन्यु
छात्र,हिंदू महाविद्यालय, दिल्ली

जब मनुष्य रूप में कृष्ण खुद प्रसाद देने आए

हिंदी साहित्य की कवत्रियों में मीरा, जहां भक्ति साधिकाओं का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं ताज मुस्लिम साधिकाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। ताज कवयित्री का उल्लेख सर्वप्रथम शिव सिंह सेंगर द्वार संपादित 'शिव सिंह सरोज' में मिलता है। 'शिव सिंह सरोज' के मतानुसार इनका जन्म 1652 सन्त है, पर इनका उल्लेख पुल्लिंग रूप में मिलता है तथा मुंशी देवी प्रसाद ने 'महिला मधुवाणी' में इनका जन्म सन्त 1700 माना है। ताज नहा धोकर मंदिर में भगवान का नित्य प्रति दर्शन करती थीं और बाद में भोजन ग्रहण करती थीं। ऐसी जनश्रुति है कि एक दिन वैष्णवों ने उसे विधर्मी समझकर मंदिर में जाने से रोक दिया। ताज उस दिन उपवास करके मंदिर के आंगन में बैठी, कृष्ण नाम जपती रहीं। कहते हैं कि रात होने पर ठाकुर जी स्वयं मनुष्य का रूप धारण कर भोजन का थाल लेकर ताज के पास आए और उन्हें भोजन कराया। प्रातः काल जब वैष्णव आए, तो ठाकुर जी ने कहा कि उनसे कहना कि तुम लोगों ने मुझे कल ठाकुर जी का प्रसाद और दर्शन का सौख्य नहीं दिया, इससे आज रात ठाकुर जी स्वयं प्रसाद दे गए हैं और तुम लोगों को संदेश दे गए हैं कि ताज को परम वैष्णव समझो। इसके दर्शन और प्रसाद ग्रहण करने में रुकावट कभी मत डालो। नहीं तो ठाकुर जी तुम लोगों से नाराज हो जाएंगे। प्रातः काल सब वैष्णव को ताज ने रात की सारी बात बताई और भोजन का थाल भी दिखाया। वे सभी वैष्णव ताज के पैर पर गिरकर क्षमा प्रार्थना करने लगे। तबसे सबसे पहले ताज मंदिर में देव दर्शन करती थीं और फिर अन्य वैष्णव दर्शन करने जाते थे।

माधुर्य भाव की भक्ति

मथुरा निवासी श्री कविराज के मातानुसार ताज एक मुसलमान कवयित्री थीं और पंजाब की रहने वाली थीं। कृष्ण से प्रेम हो जाने पर कविता की ओर उसका ध्यान आकर्षित हुआ। ताज की रचनाएं मुक्तक रूप में प्राप्त होती हैं। पुस्तक रूप में इनका केवल एक ग्रंथ मिलता है, जिसमें 'बारह मासा' विषयक छप्पय कवित्त एवं कुंडलियां पाई जाती हैं। इन्होंने रसखान आदि मुसलमान भक्त कवियों की भांति कवित्त तथा सवैया शैली को अपनाया तथा उसमें उन्हें यथेष्ट सफलता भी मिली। ताज की भक्ति माधुर्य भाव की है। वैष्णव संप्रदायों में माधुर्य भाव की भक्ति को अन्य प्रकार की भक्ति पद्धतियों से अधिक श्रेष्ठ माना जाता है। ताज ने कृष्ण को प्रियतम के रूप में मानकर रचनाएं लिखी हैं।

कृष्ण के सौंदर्य का तो कहना ही क्या? गले में माल, नाक में मोती, कान में कुंडल और मस्तक पर लाल मुकुट शोभायमान है। यह अपने कृष्ण को अन्य देवताओं से न्यारा कहती हैं। अतः श्रीकृष्ण की भावना को उन्होंने परात्पर ब्रह्म के रूप में धारण किया है, जिसकी ज्योति में सभी नर-नारी और देवता प्रतिभाषित हैं। इसका हम एक उदाहरण देख सकते हैं- छैल जो छबीला सब रंग में रंगीला बड़ा/चित्त का अडीला कहूं देवतों से न्यारा है।

ताज ने कृष्ण के मात्रा छैल-छबीले रूप का स्मरण नहीं किया है, अपितु कृष्ण के लोकरंजनकारी रूप को भी चित्रित किया है। उसने सिद्धिदाता के रूप में गणेश की स्तुति भी की है। कृष्ण की मधुर रूप की अपेक्षा उनका ऐश्वर्य रूप अधिक प्रभावशाली बन पड़ा है। पतित उद्धारक गरिमामय अवतार रूप श्रीकृष्ण उसकी आस्था एवं विश्वास के विशेष पात्र हैं। हिंदू धर्म में प्रचलित रूढ़ियों का उन्होंने खंडन किया है, उनका भरोसा मात्र नंद के कुमार पर है। वे इतना कृष्णमय हो गई कि उन पर अन्य देवों का प्रभाव नहीं पड़ता। यह बात एक उदाहरण स्पष्ट होती है- काहू को भरोसो ताज, सब देवन के दूजे ताज। /मोको है भरोसो बस, एक नंद के कुमार को। इस प्रकार ताज की भक्ति भावना का आधार श्री कृष्ण का माधुर्य रूप है। प्रेम के अनेक उपमानों में उनकी भावनाओं का यह अवगुंठन अत्यंत अनुपम है। उन्होंने अगाध अनन्य सात्विक प्रेम का सुंदर और सटीक वर्णन प्रस्तुत किया है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। इतना ही नहीं कृष्ण के प्रति उनकी भावना में विश्वासजन्य समर्पण है। कालिंदी के तट पर स्थित निकुंज के बीच पंकज शय्या, प्रस्तुत कर राधा की प्रतीक्षा करते हुए कृष्ण तथा राधा की चंचलता पर अटकी हुई आंखें कल्पना जगत की सुंदर सृष्टि हैं। परंतु भावनाओं तथा वातावरण की लौकिकता में यहां काम की प्रधानता मिलती है। इनका उदाहरण निम्न है- कालिंदी के तीर नीर निकट कदंब कुंज/ मन कहुं इच्छा कीनों सेज सरोजन की। प्रेम साम्राज्य का अवर्ध रत्न है विरह। विरह तपाया हुआ प्रेम है। ताज के विरहणी रूप का मार्मिक चित्र मर्मस्पर्शी ही नहीं अप्रतिम भी है। ताज लिखती हैं- चैन नहीं मन में, मलीन सुनैन भरे जल में न तई है।/ताज कहे पर्थक यों बाल, ज्यों चंप की माल बिलाई गई है। अतः प्रतीक्षा की लंबी अवधि के बीच यह देखकर कि अभी रात्रि बहुत शेष है। परिणाम स्वरूप शून्य भवन में प्रज्ज्वलित प्रदीप का आलोक उसके अंगों प्रखर सूर्य की तरह तप्त करता है। उपर्युक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि ताज की भक्ति माधुर्य भाव की है। मीराबाई की भांति यह भी कृष्ण को अपना प्रियतम या पति मानती थीं।

कविताओं में अलंकारों का प्रयोग

ताज ने श्रीकृष्ण के रूपांकन की ओर विशेष ध्यान दिया है। श्रीकृष्ण के रूपांकन में कवयित्री ने आभूषणों का भी उल्लेख किया है। कहीं-कहीं कवयित्री ने उनके अंग एवं आभूषणों के समन्वित सौंदर्य का चित्रण किया है। ताज के प्रस्तुत विधान में अप्रस्तुत का सौंदर्य दबने नहीं पता। उपमान सदैव उपमेय की श्रीवृद्धि में सहायक है। प्रेम संबंधी अनेक प्रसिद्ध उपमानों से उनकी भावनाओं का संबंध देखने योग्य है। ताज के काव्य में श्रृंगार और शांत रस की प्रधानता है। शांत रस के अंतर्गत अनेक संचारी भाव का स्वतंत्र अंकन कवयित्री की रचनाओं में प्राप्त होता है। यह संचारी भाव के सहायक होते हैं, जो भाव को सजीव बनाते हैं। ताज के काव्य की मुख्य भाषा ब्रजभाषा है, पर पंजाब की निवासी होने के कारण उनकी भाषा में पंजाबी शब्दों भी मिलते हैं। ताज की कविताओं में अलंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है। वह एक ऐसी संवेदनशील कवयित्री है, जो चमत्कार के चक्कर में न पड़कर भाव में डूब जाया करती हैं। माधुर्य गुण सुयुक्त होने के कारण उनकी कविताओं में अनुप्रास अलंकार का बाहुल्य मिलता है। मीरा की भांति ताज के काव्य का आधार है, इनका सर्वथा निजी अनुभव। दोनों ही की प्रेम साधना लोक-बाह्य थी, उसमें लोक और शास्त्र का विचार न था, प्रेम के प्रखर प्रभाव में लोक और वेद बह गए। लोक-लाज और कुलकानि बिसर गई, पथ -अपथ का डर छूट गया। रसखान सदृश मुसलमानों के विषय में जो बात भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कही थी, वही ताज के संबंध में भी समझनी चाहिए-'इन' मुसलमान हरि जनन पर कोटिन्ह हिन्दू वारिए। अपनी माधुर्य भक्ति के लिए ताज हिंदी साहित्य में सदैव चिरस्मरणीय रहेंगी।

रंग-तरंग

हॉर्नबिल महोत्सव

पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक विरासत का जश्न

बीते सोमवार को नागालैंड की 63 वीं वर्षगांठ पर किसामा के नागा हेरिटेज विलेज में हॉर्नबिल फेस्टिवल के 26 वें संस्करण की शानदार शुरुआत हुई। दस दिवसीय आयोजित महोत्सव में नागालैंड की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता, विरासत और कलात्मक परंपराओं के मनाया जाता है। यह फेस्टिवल अब तक के सबसे बड़े इंटरनेशनल पार्टिसिपेशन के साथ शुरू हुआ, जिसमें छह पार्टनर देश- ऑस्ट्रिया, माल्टा, स्विट्जरलैंड, आयरलैंड, फ्रांस और यूनाइटेड किंगडम शामिल थे, साथ ही अरुणाचल प्रदेश स्टेट पार्टनर था।

'त्योहारों का त्योहार' (Festival of Festivals) के रूप में प्रसिद्ध, हॉर्नबिल महोत्सव नागालैंड का सबसे बड़ा वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम है। यह प्रत्येक वर्ष 1 दिसंबर से 10 दिसंबर तक आयोजित किया जाता है। यह महोत्सव केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह नागालैंड की समृद्ध जनजातीय विरासत को पुनर्जीवित करने, संरक्षित करने और बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली मंच है। यह विविधता में एकता का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस वर्ष महोत्सव में स्थिरता और 'ईको-फ्रेंडली' पर्यटन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। इसके अलावा जी-20 की सफलता के बाद, भारत सरकार इसे अपनी 'सॉफ्ट पावर डिप्लोमेसी' और 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में प्रदर्शित कर रही है, जिसमें कई अंतर्राष्ट्रीय राजनयिक और पर्यटक भाग ले रहे हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इसकी शुरुआत वर्ष 2000 में नागालैंड सरकार द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने और जनजातियों के बीच मेल-जोल बढ़ाने के लिए की गई थी। 1 दिसंबर 1963 को नागालैंड भारत का 16 वां राज्य बना था, इसलिए हर वर्ष 1-10 दिसंबर तक इसका आयोजन होता है।

नामकरण और प्रतीक

इसका नाम 'ग्रेट इंडियन हॉर्नबिल' (Great Indian Hornbill) पक्षी के नाम पर रखा गया है। यद्यपि यह पक्षी अब नागालैंड में कम दिखाई देता है, लेकिन नागा लोककथाओं और गीतों में इसका गहरा महत्व है। इसके पंखों का उपयोग पारंपरिक नागा हेडगियर (टोपी) में प्रतिष्ठा और वीरता के प्रतीक के रूप में किया जाता रहा है।

आर्ट गैलरी

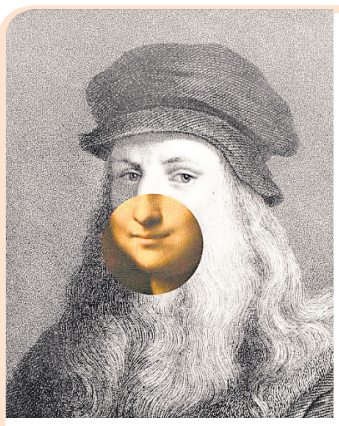

मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान

लियोनार्डो द विंची की पेंटिंग मोनालिसा दुनिया की सबसे चर्चित और रहस्यमयी पेंटिंग है। पेंटिंग की सबसे खास बात इसकी रहस्यमयी मुस्कान है। अलग-अलग कोणों से देखने पर यह बदलती हुई सी महसूस होती है। कुछ लोग मानते हैं कि इस पेंटिंग में विंची ने कुछ कोड छिपाकर रखे हैं। यही नहीं बहुत दिनों तक एक चर्चा यह भी रही कि इसका आधा हिस्सा महिला का है और बाकी आधा हिस्सा खुद विंची का है। इन रहस्यों ने इसे कला इतिहास में निरंतर शोध और आकर्षण का विषय बना दिया। मोनालिसा को 'ला जियोकोंडा' के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि इसे 1503 में शुरू किया गया और 1517 तक इस पर काम चला। हालांकि यह 1519 में विंची की मृत्यु के समय तक अधूरा रह गया था। यह चिनार की लकड़ी के एक पैनल पर ऑयल पेंट से बनाई गई है। विंची ने 'स्फुमाटो' (Sfumato) नाम की एक अभिनव तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें रंगों को सूक्ष्मता से मिश्रित किया जाता है, जिससे धुंधले किनारे और छाया के प्रभाव पैदा होते हैं। यह तकनीक पेंटिंग को जीवंत बनाती है। खासकर मोनालिसा की प्रसिद्ध रहस्यमयी मुस्कान और आंखों में, जो देखने वाले को हर कोण से खुद को देखे जाने का अहसास कराती है। रिसर्चर का मानना है कि यह पेंटिंग फ्लोरेंटाइन रेशम व्यापारी फ्रांसेस्को डेल जियोकोंडो की पत्नी लिजा घेरार्डिनी का चित्र है, इसलिए इसे 'मोनालिसा' (जिसका अर्थ श्रीमती लिसा है) कहा जाता है। यह पेंटिंग फ्रांस के पेरिस शहर में स्थित लूव्र संग्रहालय (Louvre Museum) में रखी गई है। इसे वहां बुलेटप्रूफ कांच के पीछे बहुत सेफ्टी के साथ रखा गया है। पेंटिंग की प्रसिद्धि में 1911 की चोरी का भी बड़ा हाथ है। लूव्र संग्रहालय से विंसेंजो पेरुगिया नाम के एक कर्मचारी ने इसे चुरा लिया था। इस चोरी ने दुनियाभर में सनसनी मचा दी और दो साल बाद पेंटिंग की बरामदगी ने इसे वैश्विक सुर्खियों में ला दिया। इस घटना ने मोनालिसा को कला जगत से निकालकर आम जनमानस तक पहुंचा दिया।

विंची के बारे में

लियोनार्डो द विंची 15 अप्रैल 1452 को पैदा हुए और दो मई 1519 को उनका निधन हो गया। इतालवी पुनर्जागरण के एक अद्वितीय 'पॉलीमैथ' (बहु-प्रतिभाशाली व्यक्ति) थे। उन्होंने चित्रकार, इंजीनियर, वैज्ञानिक, मूर्तिकार और वास्तुकार के रूप में अपनी छाप छोड़ी। उन्हें अक्सर 'पुनर्जागरण पुरुष' (Renaissance Man) का आदर्श उदाहरण माना जाता है, जिनकी असीमित जिज्ञासा की बराबरी केवल उनकी आविष्कारक शक्ति ही कर सकती थी। विंची की प्रसिद्धि मुख्य रूप से उनकी दो विश्व प्रसिद्ध पेंटिंग्स की वजह से ज्यादा है। 'मोनालिसा' और 'द लास्ट सपर'। इन उत्कृष्ट कलाकृतियों के अलावा, उनका 'विट्रुवियन मैन' (Vitruvian Man) का चित्र भी एक सांस्कृतिक प्रतीक बन गया। एक वैज्ञानिक और आविष्कारक के रूप में, विंची अपने समय से सदियों आगे थे। उनकी नोटबुक्स, जिन्हें वह उल्टे हाथ से लिखते थे, ताकि कोई आसानी से न पढ़ सके, शरीर रचना विज्ञान, यांत्रिकी, खगोल विज्ञान और वनस्पति विज्ञान पर विस्तृत नोट्स और रेखाचित्रों से भरी हुई है। उन्होंने उड़ने वाली मशीनों (हेलीकॉप्टर और हवाई जहाज के शुरुआती कॉन्सेप्ट), बख्तरबंद वाहनों (टैंक) और पैराशूट जैसे कई उपकरणों की अवधारणा दी। उनके कई डिजाइन उनके जीवनकाल में कभी निर्मित या व्यावहारिक नहीं हुए, लेकिन उनके विचारों और वैज्ञानिक अवलोकन ने बाद की पीढ़ियों के कलाकारों और वैज्ञानिकों को गहराई से प्रभावित किया।